

धार्मिक अल्पसंख्यकों की हस्तिसेदारी पर PM-EAC रपिर्ट

प्रलमिस के लयि:

[जनसांख्यिकीय लाभांश](#), [कूल प्रजनन दर \(TFR\)](#), [राष्ट्रीय परिवार सवास्थय सरवेक्षण](#), जनगणना 2011, जनसांख्यिकीय संक्रमण सदिधांत ।

मेन्स के लयि:

भारत में जनसांख्यिकीय परिवर्तन, भारत के जनसांख्यिकीय लाभांश का महत्त्व, भारत के जनसांख्यिकीय लाभांश से जुड़ी चुनौतियाँ ।

[स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस](#)

चर्चा में क्यों?

[प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद \(PM-EAC\)](#) के एक नए विश्लेषण के अनुसार, वर्ष 1950 से वर्ष 2015 के बीच भारत में हदुओं के जनसंख्या प्रतशित में 7.82% की कमी आई है, जबकि मुसलमानों, ईसाइयों तथा सखिों के प्रतशित में वृद्धि हुई है ।

PM-EAC रपिर्ट के मुख्य नषिकर्ष क्या हैं?

■ विश्व भर में घटती बहुसंख्यक जनसंख्या:

- वर्ष 1950 से वर्ष 2015 तक [38 OECD देशों](#) की धार्मिक जनसांख्यिकी पर एकत्रति कयि गए आँकड़ों के अनुसार, इनमें से 30 देशों के प्रमुख धार्मिक समूह रोमन कैथोलिकों के अनुपात में [उल्लेखनीय कमी](#) देखी गई ।
- सरवेक्षण में शामिल 167 देशों में वर्ष 1950-2015 की अवधि के दौरान वैश्विक स्तर पर बहुसंख्यक धार्मिक समूहों की जनसंख्या में औसत गरिवट **22%** आई ।
 - OECD देशों में बहुसंख्यक जनसंख्या तेज़ी से घटी है, जसिमें औसतन **29%** की गरिवट दर्ज की गई है ।
 - वर्ष 1950 में अफ्रीका के 24 देशों में **जीववाद अथवा स्थानीय मूल धर्म** प्रमुख था ।
 - वर्ष 2015 में अफ्रीका के इन 24 देशों में से कसिी में भी जीववाद अथवा स्थानीय धर्म मानने वाले बहुसंख्यकों की मौजूदगी नहीं देखी गई ।
 - दक्षिण एशियाई कषेत्र में बहुसंख्यक धार्मिक समूह की जनसंख्या बढ़ रही है, जबकि बांग्लादेश, पाकस्तान, श्रीलंका, भूटान और अफगानस्तान जैसे देशों में **अल्पसंख्यक धार्मिक समूहों की जनसंख्या में काफी गरिवट** आई है ।

■ भारत के संदर्भ में:

- हदु जनसंख्या में गरिवट:** हदुओं की जनसंख्या में 7.82% की गरिवट आई है । वर्ष [2011 की जनगणना](#) के अनुसार, वर्ष 2011 तक भारत में हदु जनसंख्या लगभग 79.8% थी ।
- अल्पसंख्यक जनसंख्या में वृद्धि:** मुसलमि जनसंख्या 9.84% से बढ़कर 14.095% और ईसाई जनसंख्या 2.24% से बढ़कर 2.36% हो गई ।
 - सखि जनसंख्या 1.24% से बढ़कर 1.85% और बौद्ध जनसंख्या 0.05% से बढ़कर 0.81% हो गई ।
 - जैन और पारसी समुदाय की जनसंख्या में गरिवट देखी गई है । जैन जनसंख्या 0.45% से घटकर 0.36% तथा पारसी जनसंख्या में 85% की गरिवट के साथ यह 0.03% से 0.0004% रह गई है ।
- सवसथ जनसंख्या वृद्धिदर:** [राष्ट्रीय परिवार सवास्थय सरवेक्षण](#) के आँकड़ों के अनुसार, भारत की **कूल प्रजनन दर (Total Fertility Rate- TFR)** वर्तमान में **2 के आसपास** है, जो 2.19 के वांछति TFR के नकिट है । जनसंख्या वृद्धि का अनुमान लगाने के लयि TFR एक विश्वसनीय संकेतक है ।
 - हदुओं के संदर्भ में यह वर्ष 1991 के 3.3 से घटकर वर्ष 2015 में 2.1 और वर्ष 2024 में 1.9 हो गई है ।
 - मुसलमानों में यह वर्ष 1991 के 4.4 से घटकर वर्ष 2015 में 2.6 और वर्ष 2024 में 2.4 हो गई है ।

अल्पसंख्यकों को समान लाभ: भारत में अल्पसंख्यकों को समान लाभ मलिता है और वे सुखद जीवन जीते हैं, जबकि वैश्विक स्तर पर जनसांख्यिकीय बदलाव चति का कारण बना हुआ है ।

जनसांख्यिकीय प्रतरूप और इसकी प्रासंगिकता क्या हैं?

■ जनसांख्यिकी प्रतरूप:

- यह मानव जनसंख्या में देखी जाने वाली भन्नताओं और प्रवृत्तियों को संदर्भित करता है।
- ये पैटर्न जनसंख्या गतिकी के अध्ययन के उपरान्त प्राप्त होते हैं, जिसमें जन्म दर, मृत्यु दर, प्रवास और जनसंख्या संरचना जैसे कारक शामिल हैं।

■ प्रासंगिकता:

- जनसंख्या की प्रवृत्तियों को समझना:
 - जनसांख्यिकीय डेटा का उपयोग समय के साथ प्रतरूप की पहचान करने के लिये किया जाता है। जन्म और मृत्यु दर का अध्ययन कर जनसंख्या में वृद्धि या गिरावट का अनुमान लगाया जा सकता है।
 - यह आधारभूत ढाँचा, स्वास्थ्य देखभाल, शिक्षा एवं सामाजिक सेवाओं संबंधी योजनाएँ बनाने के लिये महत्वपूर्ण है।
- कारणों और परिणामों का विश्लेषण:
 - यह जनसंख्या में परिवर्तन के पीछे के कारणों की जाँच करता है। आर्थिक विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल और सांस्कृतिक मानदंड जैसे कारक जन्म एवं मृत्यु दर को प्रभावित करते हैं।
 - परिणामों में कार्यबल की गतिशीलता, निर्भरता अनुपात (गैर-कार्यशील आयु समूहों का अनुपात) और सामाजिक सुरक्षा प्रणालियों संबंधी नैतिकार्थ शामिल हैं।
- नीति निर्माण एवं कार्यान्वयन:
 - स्वास्थ्य देखभाल: आयु-वर्गित स्वास्थ्य आवश्यकताओं की समझ से संसाधनों के प्रभावी ढंग से आवंटन में सहायता मिलती है।
 - शिक्षा: जनसांख्यिकी शैक्षणिक योजना का मार्गदर्शन करती है, जैसे कविद्यालय की अवसंरचना और शिक्षक भर्ती।
 - शहरी नियोजन: जनसंख्या वितरण शहरी अवसंरचनात्मक ढाँचे, आवास और परिवहन को प्रभावित करता है।
 - बुजुर्ग जनसंख्या: वरिष्ठ लोगों से संबंधित दो प्रमुख मुद्दों- पेंशन और स्वास्थ्य देखभाल को जनसांख्यिकी नीतियों में प्रमुखता दी गई है।

बुनियादी जनसंख्या नयितरण सदिधांत क्या है?

- माल्थस का सदिधांत: इसे वर्ष 1798 में एक ब्रिटिश अर्थशास्त्री और जनसांख्यिकीविद थॉमस रॉबर्ट माल्थस ने "जनसंख्या के सदिधांत पर अपने एक नबिध" में प्रस्तावित किया था।
 - यह सदिधांत संसाधनों और जनसंख्या वसितार के बीच परस्पर क्रिया पर केंद्रित है।
 - जनसंख्या वृद्धि: माल्थस ने तर्क दिया कि जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ती है, जिसका अर्थ है कि जनसंख्या ज्यामितीय दर (1, 2, 4, 8, 16 आदि) से बढ़ती है। जबकि संसाधनों की उपलब्धता केवल अंकगणितीय रूप (1, 2, 3, 4, 5 आदि) से बढ़ती है।
 - नतीजतन, जनसंख्या में वृद्धि संसाधनों की क्षमता से अधिक होगी।
 - संसाधन संबंधी बाधाएँ: माल्थस ने संसाधनों को लेकर दो प्राथमिक बाधाओं की पहचान की: नरिवाह (भोजन) और जनसंख्या का समर्थन करने के लिये पर्यावरण की क्षमता (सीमिति भूमि, जल आदि)।
 - माल्थस का मानना था कि जैसे-जैसे जनसंख्या बढ़ेगी, इन संसाधनों पर अधिक दबाव बढ़ेगा, जिसके परिणामस्वरूप अकाल, संसाधनों की कमी के चलते अंततः भूख, बीमारी तथा संघर्ष जैसे कारकों एवं "सकारात्मक नयितरण" उपायों की वजह से जनसंख्या में कमी आएगी।
 - जनसंख्या वृद्धि को लेकर जाँच: माल्थस ने जनसंख्या वृद्धि को लेकर जाँच को दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया:
 - सकारात्मक जाँच: ये प्राकृतिक कारक हैं जिससे जनसंख्या में कमी आती है, जैसे- अकाल, बीमारी और युद्ध आदि।
 - नकारक जाँच: ये जनसंख्या वृद्धि को नयितरित करने हेतु व्यक्तिगत या समुदायों द्वारा लिये गए सचेत नरिण्य हैं, जैसे- वलिंबित ववाह, संयम और जन्म नयितरण।
 - हालाँकि माल्थस अंततः गलत साबित हुआ क्योंकि कृषि प्रौद्योगिकी में प्रगत ने भारत जैसे देश को शुद्ध खाद्य अधशेष वाले देश की श्रेणी में ला दिया।
- जनसांख्यिकीय संक्रमण सदिधांत: यह समय के साथ जनसंख्या परिवर्तन की प्रक्रिया को रेखांकित करता है क्योंकि समाज आर्थिक और सामाजिक विकास के विभिन्न चरणों से गुजरता है।
- चरण 1- पूर्व औद्योगिक समाज:
 - इसकी विशेषता उच्च जन्म और मृत्यु दर है, जिसके परिणामस्वरूप जनसंख्या का आकार अपेक्षाकृत स्थिर रहता है।
 - संयुक्त परिवारों में जन्म नयितरण और सांस्कृतिक प्राथमिकताओं के अभाव के कारण जन्म दर अधिक देखी जाती है।
 - सीमिति चकितिसीय ज्ञान, पर्याप्त स्वच्छता का अभाव और बीमारी के व्यापक प्रसार के कारण मृत्यु दर भी अधिक होती है।
- चरण 2- संक्रमणकालीन चरण:
 - इसकी शुरुआत औद्योगिकरण और स्वास्थ्य देखभाल एवं स्वच्छता में सुधार से होती है।
 - इस दौरान चकितिसा, स्वच्छता और खाद्य उत्पादन में प्रगत के कारण मृत्यु दर में उल्लेखनीय गिरावट आई है।
 - प्रारंभ में जन्म दर उच्च रहती है, जिससे मृत्यु दर कम होने के कारण तेज़ी से जनसंख्या वृद्धि होती है।
 - इस चरण में अक्सर जनसंख्या वसिफोट देखा जाता है।
- चरण 3- औद्योगिक समाज:
 - शहरीकरण, शिक्षा, आर्थिक परिवर्तन और महिला सशक्तीकरण जैसे विभिन्न कारकों के कारण जन्म दर में गिरावट आनी शुरु हो जाती है।
 - हालाँकि जन्म दर, मृत्यु दर से कुछ अधिक होती है, जिसके परिणामस्वरूप धीमी गति से ही सही, जनसंख्या वृद्धि लगातार जारी रहती है।
- चरण 4- उत्तर-औद्योगिक समाज:

उत्तर: (d)

प्रश्न. 2 भारत को "जनसांख्यिकीय लाभांश" वाला देश माना जाता है। यह किस कारण है? (2011)

- (a) 15 वर्ष से कम आयु वर्ग में इसकी उच्च जनसंख्या
- (b) 15-64 वर्ष के आयु वर्ग में इसकी उच्च जनसंख्या
- (c) 65 वर्ष से अधिक आयु वर्ग में इसकी उच्च जनसंख्या
- (d) इसकी उच्च कुल जनसंख्या

उत्तर: (b)

प्रश्न 1:

प्रश्न 1. जनसंख्या शिक्षा के प्रमुख उद्देश्यों की विवेचना कीजिये तथा भारत में उन्हें प्राप्त करने के उपायों का वस्तुतः उल्लेख कीजिये। (2021)

प्रश्न 2. "महिलाओं को सशक्त बनाना जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करने की कुंजी है।" चर्चा कीजिये। (2019)

प्रश्न 3. समालोचनात्मक परीक्षण कीजिये कि क्या बढ़ती जनसंख्या गरीबी का कारण है या गरीबी भारत में जनसंख्या वृद्धि का मुख्य कारण है। (2015)

PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/pm-eac-report-on-share-of-religious-minorities>

